आदमी तब बड़ा नहीं होता, जब खुद की देखभाल करने लगता है। वह बड़ा तब होता है, जब दूसरों की देखभाल करने लगे। - **विल्हेल्म स्टेकल,** ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक

अच्छी सोच

सवालों की भूख से जीवन का हल

हर व्यक्ति अपना जीवन कुछ सवालों और जवाबों के बीच निकाल देता है। जब कोई पक्षी सुबह उड़ान भरता है तो वह कुछ सवाल पूछता है और उसे जवाब की तलाश रहती है। जब वह रात में अपने घोंसले में आता है, तब भी वह कुछ सवाल लिए होता है। मनुष्य में भी बिज़नेसमैन, राजनेता, कलाकार, किसान आदि कोई भी हो, सभी को अपने सवालों के जवाब चाहिए। पूरा जीवन सवालों और जवाबों की श्रृंखला है-

- कैसे हम समस्या खत्म करें? कैसे खुशी ढूंढ़ें? कैसे परेशानियां खत्म करें? कैसे दोस्त बनाएं? किस तरह ताकत और प्रतिष्ठा हासिल कर सकते हैं? आज के हालात में हम सवाल और जवाब पैसे के आसपास ही रहते हैं। सभी टीवी शो, अख़बार, पत्रिकाएं इन्हीं से भरे रहते हैं। वैदिक ग्रंथ कहते हैं कि अब आप मनुष्य हैं तो आपके सवाल यह होना चाहिए कि मैं कौन हूं। आज के दौर में खाना, सोना और शेष कार्य मानव की बौद्धिकता का बुनियादी पक्ष दिखाता है। लेकिन असली सवाल कुछ और ही हैं। वे ये हैं-

राधानाथ स्वामी
द जर्नी होम के लेखक

मैं कौन हूं? मैं परेशान क्यों हूं? मैं कहा से आया हूं? मैं कहा जा रहा हूं। ईश्वर कौन है? इस ब्रह्मांड की प्रकृति क्या है? मेरा ईश्वर और इस समूचे ब्रह्मांड से क्या संबंध है? मानव यहां अपना उत्थान करने ही आया है। इन विषयों या प्रश्न पर गहन जानकारी जुटाने। मनुष्य जीवन का वास्तविक आध्यात्मिक मूल्य यही है। यदि कोई वाकई में भोजन पचाना चाहता है तो उसे भूख होनी चाहिए। यदि भूख ही नहीं होगी तो पाचन तंत्र कमजोर होगा। इसलिए भूख जीवन का अहम हिस्सा है। यही हमें पाचन की ताकत देता है।

जब हमें वास्तव में समस्याएं हल करने की जल्दी और भूख होगी, तभी हम उनके बारे में पूछते हैं, जो हल बता सके। इसके बाद हमारा मानव जीवन शुरू होता है। ग्रंथ कहते हैं, एक अंतिम परीक्षा होती है और वह है मृत्यु। जब तक हम हार नहीं जाते, तब तक वह भयावह नहीं है। मृत्यु अच्छी या बुरी नहीं होती। यदि हम परीक्षा में विफल हो जाते हैं तो मृत्यु की स्थिति आना ही है। यदि हम पास हो जाते हैं तो यह समस्त लोगों के लिए चमकदार अवसर होता है। हम यह परीक्षा पास कर सकते हैं, इसके लिए जरूरी है कि जीवन के सवालों के जवाबों को ढूंढ़ें। ये जवाब जब मिलेंगे, तभी आप सही मार्ग पर चल सकेंगे और जीवन के गंतव्य तक पहुंचेंगे। दो बातें सदैव याद रखें- एक, मृत्यु कभी भी आ सकती है और दूसरा, ईश्वर का पवित्र नाम हमेशा याद रखे।

प्रेरणा • मतदाताओं ने नकारात्मक प्रचार खारिज कर सकारात्मकता को अपनाया, एकजुटता को पुरस्कृत किया

बिहार चुनाव से यह सीख सकता है देश

विनय कुमार कंठ
पटना विश्वविद्यालय में वरिष्ठ प्राध्यापक

चुनाव नतीजे बिहार की जनता की राजनीतिक परिपक्वता को दिखाते हैं। सीमित विकल्पों में कारगर विकल्प चुनने का प्रयास न सिर्फ महागठबंधन ने किया, बल्कि जनता ने भी किया।

सांप्रदायिक असहिष्णु भाषा और आचरण की अपनी राजनीतिक सीमा है। भारतीय समाज में सामान्य जन उसे व्यापक समर्थन नहीं दे सकता। यह एक बार फिर साबित हुआ है।

बिहार संघर्ष और नई शुरुआत की भूमि रहा है। इसी जमीन से धारा का रुख बदला जाता रहा है। यहां एक आत्मविश्वास रहा है, जो नए को जन्म दे सकता है। यह चुनाव एक बार फिर से इस तथ्य को प्रमाणित करता है। बुद्ध से लेकर, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और फिर जेपी के आंदोलन तक उदाहरण भरे पड़े हैं। वैसे तो हर चुनाव के बाद जनादेश का स्वागत औपचारिकता होती है, लेकिन यह जनादेश वास्तव में स्वागतयोग्य है। खासतौर से इस वजह से चूंकि यह बिहार की जनता की राजनीतिक परिपक्वता को दिखाता है। एक स्थिति, जिसमें विकल्प सीमित थे, एक कारगर विकल्प चुनने का प्रयास न सिर्फ महागठबंधन ने किया, बल्कि जनता ने भी किया। दरअसल, बिहार चुनाव के इस नतीजे से पूरा देश बहुत कुछ सीख सकता है।

इस चुनाव में और चुनाव के बहाने जनता ने नई संभावनाओं को खोजा है और नेतृत्व को इससे सीख लेनी चाहिए। राजद को इतनी अधिक सीटें मिलीं। इससे सीख लेनी चाहिए कि इस राज्य में गरीब, उपेक्षित, पिछड़े, अतिपिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक आदि ही बहुसंख्यक हैं, इसलिए इस विशाल तबके के हितों को ध्यान में रखना नेतृत्व के लिए भी अपेक्षित होगा और राज्य के लिए भी। वहीं जदयू विकास की अपनी नीति को गरीबों के पक्ष में और ज्यादा ले जा सके, तो उसका दूरगामी प्रभाव होगा।

इस चुनाव में बिहार ने सबसे बड़ी सीख यह दी है कि सांप्रदायिक असहिष्णु भाषा और आचरण की अपनी राजनीतिक सीमा है। भारतीय समाज में सामान्य जन उसे व्यापक समर्थन नहीं दे सकता। किसी खास समय और संदर्भ में भले ही वह वोट का जरिया बने, मगर ज्यादा स्थितियों में उसके राजनीतिक और चुनावी परिणाम भी नकारात्मक होंगे। चुनाव में मतदाताओं के ध्रुवीकरण की पूरी कोशिश की गई, लेकिन जनता ने राज्य में 26 वर्षों से कायम सांप्रदायिक शांति को भंग नहीं होने दिया। यह जमीनी स्तर पर मतदाता के परिपक्व होने का संकेत है। राज्य के मतदाताओं ने 2014 के आम चुनाव में अलग तरह से मतदान किया था, जबकि विधानसभा चुनाव में उसका रुख अलग ही नज़र आया है। संदेश साफ है कि नेता को सोच तो राष्ट्रीय रखनी होगी, लेकिन स्थानीय स्तर पर काम करके दिखाना होगा यानी एक्ट लोकल, थिंक नेशनल।

अब मतदाता किन्हीं हवाई बातों के बहकावे में नहीं आना चाहता। वह दैनिक जिंदगी में बदलाव देखना चाहता है। राजग का पूरा अभियान प्रोफेशनल्स और राष्ट्रीय नेतृत्व पर निर्भर रहा। इससे जनता क्या सोच रही है, वह कैसी बातों को पसंद करेगी, इसे वे समझ नहीं पाए। यह भ्रम एक्जिट पोल आने के बाद तक कायम रहा। राजग का नेतृत्व कुछ अलग ही दावे करता रहा। यह केवल इसी बात को दिखाता है कि नेतृत्व की जनता से दूरी बनी हुई थी। स्थानीय नेतृत्व को मौका देकर इस कमी को दूर किया जा सकता था, पर वे ऐसा नहीं कर सके।

जातिवादी और पहचान की राजनीति के लिए बिहार जाना जाता है। लालू यादव ने चुनावी पासे जिस तरह पलटे वह इसे रेखांकित भी करता है, लेकिन इस तथ्य के प्रभावी होने में विकास के लिए प्रतिबद्ध मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार की छवि ने योगदान दिया। इसके बिना जातीय समीकरण कितने प्रभावी होते, यह पहले की तरह निश्चितता के साथ नहीं कहा जा सकता। जाहिर है चुनाव ने एक सीख यह दी है कि भविष्य के किसी समय में साकार होने वाले वादे और भावनात्मक मुद्दों की बजाय स्थानीय स्तर पर विकास ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। विकास के लिए ललक समाज में बढ़ती सकारात्मकता का ही परिणाम कही जा सकती है। अत्यधिक उग्र नकारात्मक प्रचार और व्यक्तिगत स्तर पर किए गए प्रहारों को मतदाताओं ने सिरे से नकार दिया। व्यक्तिगत स्तर पर वोटर के लिए चाहे यह कसौटी उतनी खरी न प्रतीत होती हो, लेकिन मतदाता का सामूहिक अवचेतन का निष्कर्ष सकारात्मकता के पक्ष में ही है। अगर आपने टीवी पर रिपोर्टरों को मतदाताओं से बात करते देखा हो तो उसकी थीम 'शांति' ही थी। वोटर जानना चाहता है कि आपके पास सकारात्मक बातें कौन-सी हैं। इसी के साथ यह बात आती है कि अब मतदाता अपने अनुभव की कसौटी पर दावों को परख रहा है। आर्थिक वृद्धि के दावों, आंकड़ों और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों की सकारात्मक रेटिंग का उसके लिए कोई अर्थ नहीं है। वह तो यह देख रहा है कि अरहर की दाल उसकी पहुंच से बाहर होती जा रही है। सारे राजनीतिक पर्यवेक्षक और एग्जिट पोल कराने वाली एजेंसियां इसलिए गफलत में पड़ गईं, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित सारे बड़े नेताओं की सभाओं में भारी भीड़ उमड़ रही थी। मोदी की सभा में खासतौर पर ज्यादा भीड़ थी। संदेश साफ है कि वोटर इतना परिपक्व हो चुका है कि वह हर नेता को सुनना चाहता है कि उसके पास उन्हें देने के लिए क्या है? सबको सुनकर, जो निष्कर्ष निकला उसके हिसाब से वोट दिया।

हाल के वर्षों में हुए अधिकतर चुनावों में वोट किसी के खिलाफ डाले जाते रहे हैं। 2014 के लोकसभा चुनाव और फिर दिल्ली के विधानसभा चुनाव में इसकी झलक देखी जा सकती है। वहीं बिहार के इस चुनाव में वोट किसी के खिलाफ नहीं, बल्कि समर्थन में डाले गए। पिछड़ों, अतिपिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों और हर समुदाय के गरीबों की विकास की आकांक्षा की अभिव्यक्ति इस चुनाव में दिखती है। चुनाव परिणाम इस तबके की उम्मीदों की अभिव्यक्ति है। इसीलिए महा गठबंधन को जातीय और समुदायगत समीकरण का भी सीधा लाभ मिला। बिहार चुनाव इस अर्थ में भी उम्मीद जगाने वाला है कि इससे समावेशी राजनीति और समावेशी अर्थनीति की गुंजाइश बनती है, जहां सभी वर्गों के हितों को ध्यान में रखा जाए। इससे लोकतंत्र और राजनीति को एक नई दिशा मिलेगी। बिहार चुनाव गठबंधन की राजनीति की नई संभावनाओं के द्वार भी खोलता है, जो राष्ट्रीय राजनीति और राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन को दूर तक प्रभावित करेगा। इसने विपक्ष की एकजुटता को पुरस्कृत किया है।

कुल-मिलाकर बिहार के इस चुनाव से मिली सीख का सार निकालें तो यह बात सामने आती है कि अब विकास, एकजुटता, लोकतांत्रिक व धर्मनिरपेक्ष, सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जबकि धर्मांधता, ध्रुवीकरण और दंभ को दंडित किया जाना चाहिए।

खुशी के रंग

न्यूयॉर्क के कृषि बाजार में घूमने आई यह छात्रा अपने साथ ज्यादा नगद पैसे नहीं लाई थी, लेकिन उसे यहां कुछ चीजें पसंद आ गई। छात्रा ने जब अपनी उलझन बताई तो सामने खड़ी महिला ने तुरंत मोबाइल क्रेडिट कार्ड रीडर आगे कर दिया। कृषि बाजार में उसे इसकी उम्मीद नहीं थी। बस फिर क्या था, छात्रा खुश हो गई और उसने धन्यवाद कहते हुए अपना कार्ड आगे किया और डिजिटल पेन से साइन करके खरीदारी कर ली। छात्रा के लिए ये चीजें इसलिए महत्वपूर्ण थीं, क्योंकि वह अपने माता-पिता को गिफ्ट करना चाहती थी।

तो ये करें...

जब पराजय शर्मिंदगी के अहसास से भर दे

अधिकांश लोग पराजय को बर्दाश्त नहीं कर पाते और अत्यधिक शर्मिंदगी महसूस करते हैं। इसके साथ उनमें बहुत-सा गुस्सा भी पैदा हो जाता है। हालांकि, सच्चाई यही है कि जीत से जो रोमांच पैदा होता है, वह पराजय की आशंका की मौजूदगी के कारण ही होता है।

जिम्मेदारी स्वीकार करें, दूसरों को दोष न दें

1. पराजय के लिए आप ही जिम्मेदार होते हैं। पराजय से सीखने के लिए यह जरूरी है कि आप उसे स्वीकारें, फिर उसका विश्लेषण करें और इसके बाद गलतियां अपने आप ध्यान में आ जाती हैं, जिन्हें सुधार कर आगे बढ़ा जा सकता है।

2. हार के क्षणों में अपने से बुद्धिमान व्यक्ति का मार्गदर्शन लें। किसी का मार्गदर्शन लेना कमजोरी नहीं दर्शाता। यह हमारी विनम्रता का प्रतीक है।
3. हर पराजय में जीत के अवसर देखने की सलाह दी जाती है, लेकिन यह वाकई वैज्ञानिक सत्य है। इस तरह के सकारात्मक रुख से विज्ञान की दुनिया में नाकामी के बाद बड़े-बड़े आविष्कार हुए हैं।

हिम्मत न हारकर लक्ष्य पर नज़र जमाए रखें

1. लक्ष्य सामने रखने से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि जीत की राह में अड़चनें आएंगी व झटके भी लगेंगे पर लक्ष्य पर नज़र होने से आप इन सबसे उबर जाएंगे और कभी प्रयास छोड़कर बैठ जाने का ख्याल नहीं आएगा।

2. हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास कीजिए। इससे भीतर संतोष होता है कि आप जो कुछ कर सकते थे, आपने किया। यह अहसास पराजय के क्षणों में आपका संबल बनता है।
3. हार से एक अहसास यह पैदा होता कि चीजें हमारे काबू में नहीं है, जो हताशा पैदा करता है। कुछ ऐसा करें, जो आप न कर सकते हों। छोटी बातें- जैसे पसंदीदा व्यंजन सामने पाकर भी उसे न खाना। इससे हार से पैदा हुई हताशा कम होगी।

निराशा के पलों में खुद पर भरोसा बनाए रखें

1. जब सारी बातें नाकाम हो जाती हैं, कोई रास्ता नज़र नहीं आता, तब खुद पर भरोसा आपको निराशा की गर्त से बाहर खींच लेगा। खुद से कहें कि मुझमें इतनी काबिलियत है कि मैं अंततः विजयी हो जाऊंगा। मैं इसका हकदार हूं।

2. यह समझें कि हर क्षण नया और ताज़गी लेकर आता है। यह अहसास आपको नए उत्साह के साथ प्रयास करने की प्रेरणा देगा।
3. इतिहास के पन्नों से महान लोगों की पराजय व नाकामियों के बारे में पढ़ें। इससे पता चलेगा कि पराजय को टाला नहीं जा सकता। आपको यह भी पता चलेगा कि इन लोगों ने पराजय को जय में कैसे बदला।

द न्यूयॉर्क टाइम्स से

अब पाक के परमाणु कार्यक्रम पर शिकंजे की तैयारी

पाकिस्तान अपने परमाणु हथियारों के जखीरे में तेजी से बढ़ोतरी कर रहा है। प्रमुख विशेषज्ञ बता चुके हैं कि उसके पास करीब 120 परमाणु हथियार हैं, जबकि दुनियाभर में परमाणु हथियारों की संख्या कम करने की नीतियों पर काम हो रहा है। बड़ी महाशक्तियां ऐसा कर रही हैं। इस कारण अमेरिका और उसके सहयोगी देश पाकिस्तान के परमाणु हथियार कार्यक्रम पर शिकंजा कसने की रणनीति बना रहे हैं। अमेरिका ने ही अन्य देशों की मदद से ईरान का परमाणु कार्यक्रम बंद कराया है, अब पाकिस्तान की बारी है।

• एडिटोरियल बोर्ड

पाकिस्तान जल्द से जल्द अधिक परमाणु बम वाला तीसरा देश कहलाना चाहता है। वर्तमान में अमेरिका और रूस क्रमशः पहले व दूसरे नंबर पर हैं, उनके बाद चीन, फ्रांस और ब्रिटेन का नंबर आता है। पाकिस्तान चीन से आगे निकलने की कोशिशों में है। यह स्पष्ट है कि हाल के वर्षों में किसी अन्य देश की तुलना में पाकिस्तान परमाणु हथियारों की संख्या बढ़ा रहा है। अमेरिका और उसके सहयोगी देश पाकिस्तान पर नजर रखे हैं। इनमें वे देश भी हैं, जिन्होंने मिलकर ईरान का परमाणु कार्यक्रम रोका। अब पाकिस्तान की बारी है। ऐसा इसलिए क्योंकि उसका परमाणु कार्यक्रम पूरे दक्षिण-पूर्वी एशिया में अस्थिरता ला सकता है। इसमें चीन को भी नुकसान है और अमेरिका को भी। अमेरिका का कारोबार बड़े पैमाने पर भारत, चीन और दक्षिण-पूर्वी एशिया में फैला है। पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम में उसकी मिसाइलें भी हैं, जिनका कुछ महीनों के दौरान परीक्षण किया गया है। हालांकि भारत ने भी परमाणु क्षमता वाली मिसाइलों का परीक्षण किया है, लेकिन विश्वसनीयता और रिकॉर्ड में भारत की छवि वैश्विक स्तर पर मजबूत है।

अमेरिका के लिए यह परेशान करने वाला सत्य है, क्योंकि पाकिस्तान उग्रवादी समूहों का गढ़ है। यही बात है, जो पूरे दक्षिण एशिया के लिए खतरनाक है। वास्तव में पूरे विश्व के लिए। इसलिए जरूरी है कि अंतरराष्ट्रीय जगत को प्राथमिकता के साथ पाकिस्तान पर लगाम कसनी चाहिए ताकि वह अपने परमाणु हथियारों का निर्माण बंद करे। बड़ी विश्व शक्तियों ने दो साल के सतत प्रयासों के बाद ईरान को समझौते के लिए राजी किया था। इसी कारण वह एक भी परमाणु हथियार नहीं बना सका। अमेरिका में ओबामा प्रशासन ने बाधाओं के बावजूद इस जटिल विषय पर गंभीरता से विचार करना शुरू कर दिया है। गत 22 अक्टूबर को व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति बराक ओबामा और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के बीच गंभीर वार्ताएं हुई हैं, लेकिन उनमें क्या बातचीत हुई यह विस्तार से सामने नहीं आया है। ऐसे में संभव है कि ओबामा प्रशासन ने नवाज शरीफ को अपनी चिंताओं से अवगत करा दिया होगा। अमेरिका समेत सभी पश्चिमी देश अच्छी तरह जानते हैं कि कश्मीर को लेकर पाकिस्तान और भारत के बीच गहरे मतभेद हैं। ऐसे में पश्चिम को चाहिए कि वह पाकिस्तान को परमाणु हथियारों का विस्तार करने में संयम बरतने के लिए राजी करे। साथ ही उसे अंतरराष्ट्रीय नियम याद दिलाएं। इसमें पाकिस्तान का यह फायदा है कि परमाणु शक्तियों के समूह में उसे कुछ स्वीकार्यता के साथ तकनीक मिल जाए।

चीन को छोड़ परमाणु संपन्न राष्ट्रों के समूह में पाकिस्तान को लंबे समय से खारिज किया जाता रहा है। उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दंडित भी किया गया है, क्योंकि वर्ष 1998 में भारत के परमाणु परीक्षणों के तुरंत बाद उसने भी परमाणु परीक्षण किए थे। पाकिस्तान ने खुद को 'अंतरराष्ट्रीय परमाणु अप्रसार संधि' से बाहर रखा है। इसी कारण उसे इस क्षेत्र में उत्तर कोरिया के समान देखा जाता है। जबकि वह चाहता है कि पश्चिमी देश उसे भी भारत के समान देखें। इसके उलट भारत ने भी दशकों तक अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों का सामना किया है। अच्छे रिकॉर्ड के कारण समय बदला और अमेरिका ने चीन की तरह तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले देश भारत के साथ परमाणु ऊर्जा समझौता किया। उसी की बदौलत भारत ने परमाणु सहयोग समझौता किया और अमेरिका से परमाणु ऊर्जा तकनीक हासिल की। पाकिस्तान को यही बात चुभने लगी। उसने अमरिका से कहा कि वह भारत जैसी परमाणु डील चाहता है। इस पर अमेरिकी अधिकारियों ने स्पष्ट कर दिया है कि पाक के साथ भारत जैसी डील की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि अमेरिकी संसद उसका कड़ा विरोध करती है। पाकिस्तान अमेरिका के सहयोग से 48 देशों वाले परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में शामिल होना चाहता है, ताकि ऊसे परमाणु ईंधन और तकनीक आसानी से मिल सके। इस बारे में एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि पाकिस्तान को परमाणु हथियारों का निर्माण रोकना होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि अमेरिका समेत कई देशों को आशंका है कि उसके परमाणु हथियार आसानी से आतंकवादियों के हाथ लग सकते हैं।

अमेरिका को आशंका है कि पाक के परमाणु हथियार सुरक्षित नहीं हैं, इसलिए किसी भी तरह उनका विस्तार रोकने के लिए ओबामा प्रशासन गंभीरता से प्रयास कर रहा है।

इसी केसाथ पाकिस्तान को लंबी दूरी की मिसाइलों का निर्माण रोकना होगा और उस संधि पर हस्ताक्षर करने होंगे, जिसमें परमाणु हथियारों का परीक्षण पर प्रतिबंध की बात है।

अगर पाकिस्तान ऐसा करता है, तो उसे दूरगामी लाभ होंगे। वर्तमान में वह अपनी जनता को पर्याप्त सुविधाएं नहीं दे पा रहा है, क्योंकि उसके बजट का 25 प्रतिशत हिस्सा रक्षा मामलों पर होता है। वह भारत के साथ होड़ लगाता है, जो उसी के लिए नुकसानदायक है। © The New York Times

अगले साल से नज़र आने लगेंगे डिज़िटल युग के बड़े बदलाव

• स्टीव लॉर

डिजिटल युग में हमने पिछले 10 साल में जो बदलाव देखे हैं, वह शुरुआत मात्र है। वर्ष 2016 से डिजिटल युग के बदलाव मुख्य धारा में आ जाएंगे। टेक्नोलॉजी रिसर्च कंपनियां आने वाले वर्षों का ट्रेंड जानने में जुटी हैं। उन्हीं की रिसर्च का असर अमेरिका और दुनियाभर की टेक इंडस्ट्री पर पड़ता है।

मैसाचुसेट्स की प्रतिष्ठित आईडीसी (इंटरनेशनल डेटा कॉर्पोरेशन) ने हाल ही में एक रिपोर्ट जारी की है। उसके अनुसार अगले चार साल में डिजिटल युग में बड़े बदलाव होने जा रहे हैं। वर्ष 2016 से इनकी शुरुआत हो जाएगी। आईडीसी की मानें तो वर्ष 2020 तक 30 फीसदी से ज्यादा टेक्नोलॉजी कंपनियां, जिन्हें हम जानते हैं, टिक नहीं पाएंगी। या तो उनका अधिग्रहण हो जाएगा या फिर वे विफल हो जाएंगी।

अन्य दो फर्म गार्टनर स्टडी और फॉरेस्टर ऑउटलुक' की रिसर्च रिपोर्ट में बताया गया है कि डिजिटल इनोवेशन में तेजी का दौर लगभग आ गया है और अब इसका दायरा कहीं ज्यादा बड़ा होगा। डिजिटल टेक्नोलॉजी अर्थव्यवस्था और कारोबार के परंपरागत तरीकों में बदलाव ला रही है। क्लाउड कम्प्यूटिंग, मोबाइल डिवाइस, एडवांस डेटा एनालिसिसि और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस। ये आज बेहतर, सस्ती और आसानी से उपलब्ध हैं। इनसे लोगों की जिंदगी में बड़े बदलाव आए हैं। आईडीसी के चीफ एनालिस्ट फ्रैंक जेन्स कहते हैं, किसी भी क्षेत्र की मुख्यधारा में शामिल जो कंपनियां आगे की नहीं सोचेंगी, उन्हें मुश्किल हो सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि कई कंपनियां आगे के लिए रणनीति नहीं बनाती हैं। अगले तीन साल में ही टॉप 20 में से एक तिहाई कंपनियों के लिए मुश्किलें आएंगी। यानी उनके राजस्व, लाभ और बाजार में छवि बिगड़ सकती है। या वे मुख्य कारोबार से बाहर हो सकती हैं। ट्रेंड की रिपोर्ट पर जोर देने में प्रतिष्ठित रिसर्च कंपनियों में भिन्नताएं भी हैं।

द फॉरेस्टर ऑउटलुक ने कंपनियों से कहा है कि अब 'उपभोक्ता युग' के अनुसार टेक्नोलॉजी और कॉर्पोरेट रणनीति को आकार देना होगा। जबकि गार्टनर की रिसर्च में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) के क्षेत्र में हो रही प्रगति का जायजा लिया गया है। उसका कहना है ऑटोनॉमस सॉफ्टवेयर अर्थव्यवस्था और दैनिक जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाएंगे। भविष्य उन्हीं कंपनियों का होगा, जो सबसे कारगर ऐसे सॉफ्टवेयर बनाएंगी।

आईडीसी की रिपोर्ट में कोडिंग को किंग बताया गया है यानी वर्ष 2018 तक डिजिटल बदलाव लाने वाली कंपनियों में सॉफ्टवेयर पेशेवरों की संख्या दोगुनी हो जाएगी। क्लाउड और वेब डेवलपमेंट का हुनर रखने वाले सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की जबर्दस्त मांग रहेगी। यही बात डेटा वैज्ञानिकों के बारे में भी है, क्योंकि कोड और डेटा मिलकर ही इनोवेशन होता है।

© The New York Times